पाठयोजना

महाविद्यालय का नाम — राजमाता भग महाविद्यालय पंडौल
दिनांक — 28-04-2020
कक्षा — स्नातक प्रथम वर्ष (Subsidiary)
विषय — इतिहास (Subsidiary)
पाठ — कुतुबुद्दीन ऐबक की उपलब्धियाँ
क्रमांक — III
लेखक का नाम — मुकेश कुमार सिंह
व्याख्यान अनुमानतः — 30

क्रम सं०	शिक्षण बिन्दु	छात्र अध्यापक क्रियाएँ	श्यामपट्ट
1	परिचय	गौरी के गुलामों में सबसे योग्य और विश्वसनीय कुतुबुद्दीन ऐबक था। कुतुबुद्दीन 'ऐबक' नामक जनजाति का था। वह तुर्किस्तान का रहने वाला था और बचपन में ही दास के रूप में निशापुर के बाजार में लाया गया जहाँ काजी फखरुद्दीन अब्दुल अजीज कूफी ने खरीद लिया। काजी ने उसकी उचित ढंग से देखभाल की और उसे धनुर्विद्या और घुड़सवारी की शिक्षा दी। इसने कुरान पढ़ना भी सीख लिया और शीघ्र वह कुरान खाँ (कुरान का पाठ करने वाला) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बाद में उसे गजनी ले जाकर बेच दिया गया जहाँ मुहम्मद गौरी ने उसे खरीद लिया। गौरी की सेवा में आने के बाद कुतुबुद्दीन के जीवन में महान परिवर्तन आया। अपनी प्रतिभा, लगन, ईमानदारी और स्वामीभक्ति के बल पर कुतुबुद्दीन ने गौरी का विश्वास प्राप्त कर अमीर-ए-आखुर	

Scanned with CamScanner

के पद पर (1191) मुइज्जुद्दीन का शासनकाल)
पहुँचा। इस पद पर रहते हुए ऐबक ने गोर, बामियान और गजनी के युद्धों में सुल्तान की सेवा की। बाद में तराइन के युद्ध (1192) में उसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1192 से 1206 तक ऐबक ने गोरी के प्रतिनिधि के रूप में उत्तर भारत के विजित भागों का प्रशासन संभाला और इसी अवधि में ऐबक ने उत्तरी भारत में तुर्की शासन का विस्तार भी किया।

1206 ई० में मुहम्मद गोरी की आकस्मिक मृत्यु के पश्चात गोरी के तीन प्रमुख विश्वास पात्र दासों — यल्दूज, कुबाचा और ऐबक ने आपस में गोरी के साम्राज्य को बाँट लिया जिसमें ऐबक को उत्तरी भारत का प्रांत जिसमें लाहौर से लेकर दिल्ली तक का क्षेत्र शामिल था प्राप्त हुआ। औपचारिक रूप से 25 जून 1206 ई० को ऐबक गद्दी पर बैठा और इसके साथ ही भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई। लेकिन उसने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की बल्कि मलिक और सिपहसालार की पदवी से ही संतुष्ट रहा। उसने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।

2. यल्दौज से संबंध

ऐबक की भाँति यल्दौज भी गोरी का दास था और उसे गजनी का क्षेत्र शासन हेतु प्राप्त हुआ था लेकिन उसने पंजाब के क्षेत्र पर अपना दावा पेश किया और पंजाब पर आक्रमण कर दिया फलतः 1208 ई० में यल्दौज और ऐबक के बीच युद्ध हुआ जिसमें यल्दौज पराजित हुआ और ऐबक ने आगे बढ़कर गजनी पर भी अधिकार कर लिया किन्तु जल्द ही स्थानीय सरदारों के विरोध के कारण ऐबक को गजनी छोड़कर वापस लाहौर लौटना पड़ा और गजनी पर यल्दौज का पुनः अधिकार हो गया। इसके पश्चात यल्दौज ने जीवित रहते ऐबक के समय कभी पंजाब पर आक्रमण नहीं किया।

3. कुबाचा से संबंध:

ऐबक की भाँति कुबाचा भी गोरी का दास था और उसे मुल्तान और उच्छ का क्षेत्र शासन हेतु प्राप्त हुआ था। इसके प्रति ऐबक ने मैत्रीपूर्ण एवं कूटनीतिक चाल चली और उसने अपनी बहन का विवाह कुबाचा के साथ कर दिया जिससे दोनों में मधुरता स्थापित हो गयी और कुबाचा ने ऐबक की अधीनता स्वीकार कर

Scanned with CamScanner

क्र. सं.	शीर्षक बिन्दु	विषय - अध्ययन विवरण
4.	ऐबक और अलीमर्दान	गोरी के जाने के बाद ऐबक भारत में तुर्की सत्ता का विस्तार कर रहा था इसी समय गोरी का एक सेनापति बख्तियार खिलजी ने पूर्व में बिहार - बंगाल के क्षेत्र में 1197 से 1202 ई० के बीच तुर्की सत्ता की स्थापना की। लेकिन अलीमर्दान ने बख्तियार खिलजी की हत्या कर अपने आप को लखनौती का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया और शासन करने लगा। लेकिन खिलजी सरदारों के विरोध एवं विद्रोह के कारण अली मर्दान को बंगाल से भागना पड़ा और वह ऐबक के पास दिल्ली गया। ऐबक को बंगाल पर नियंत्रण करने का यह सुनहरा अवसर मिला फलतः ऐबक ने बंगाल के खिलजी सरदार मुहम्मद शेरां को पराजित कर अली मर्दान को पुनः बंगाल का शासक बना दिया। फलतः अलीमर्दान और खिलजी सरदारों ने ऐबक की अधीनता स्वीकार कर ली और बंगाल पर ऐबक का प्रभाव स्थापित हो गया।
5	राजपूतों से प्रतिरोध	गोरी की मृत्यु का लाभ उठाकर राजपूत राज्यों ने अपने आपको स्वतंत्र कर लिया था अतः ऐबक ने इन राज्यों को तहस नहस किया और बदायूँ पर अधिकार कर इल्तुतमिश को वहाँ का प्रशासक नियुक्त किया। लेकिन अपनी आकस्मिक मृत्यु के कारण ऐबक कालिंजर और ग्वालियर पर पुनः अधिकार नहीं कर सका।

Scanned with CamScanner

विवरण बिन्दु	कार्य-अध्याय व क्रिया	स्पष्टीकरण

1210 ई० में लाहौर में चौगान खेलते समय घोड़े से गिरकर उसकी मृत्यु हो गई।

(5) धार्मिक — ऐबक धार्मिक रूप से कट्टर था। तत्कालीन विद्वान हसन निजामी और फक्र-ए-मुदब्बिर को उसका संरक्षण प्राप्त था। इन्होंने उसे अपना ग्रंथ समर्पित किया था। हसन निजामी ने ताजुल-मासिर तथा फक्र-ए-मुदब्बिर ने आदाब-उल-हर्ब व अल-शजरा नामक ग्रंथों की रचना की थी।

(6) स्थापत्य कला — ऐबक ने राजधानी के रूप में दिल्ली नगर का विकास किया और दिल्ली तथा अजमेर में मस्जिदें बनवायीं। दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण करवाया जो भारत में इस्लामी पद्धति पर निर्मित प्रथम मस्जिद मानी जाती है। दूसरी मस्जिद अढ़ाई दिन का झोपड़ा का निर्माण अजमेर में करवाया। इतना ही नहीं ऐबक ने 1199 ई० में कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में कुतुब मीनार का निर्माण कार्य प्रारंभ करवाया जो 1230-31 ई० में इल्तुतमिश के समय में पूरा हुआ।

इस प्रकार दिल्ली सल्तनत के संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक ने न केवल अपने

क्र. सं.	शिक्षण बिंदु	छात्र-अध्यापक क्रिया	श्यामपट्ट
		4 वर्ष के छोटे बालक गुलाम ने भारत में तुर्की शासन की नींव डाली। कुतुबुद्दीन ऐबक ने गुलाम वंश के विरोधियों को पराजित एवं नियंत्रित कर शांति और व्यवस्था स्थापित किया। उसने केवल शासन के साथ-साथ साहित्यिक प्रगति एवं स्थापत्य निर्माण में रुचि ली। इसके बाद वह अपनी दानशीलता के कारण लाखबख्श (लाखों का दान देनेवाला) और पीलबख्श (हाथियों का दान देनेवाला) की उपाधि से विभूषित किया गया।	

मुकेश कुमार (प्र)
छात्र-अध्यापक
(… महाविद्यालय पंडौल)
मधुबनी